श्री अनुराग सिंह ठाकुर : सर, माननीय सांसद बहुत सीनियर मेम्बर हैं। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि अगर आप अपना खेती का और संसद का लम्बा अनुभव देखेंगे, तो आपके ध्यान में यह आएगा कि MSP के दाम अगर record बढ़ाए हैं - मैं आपको लम्बी लिस्ट पढ़कर बता सकता हूं - उसके बाद भी कारण क्या हैं। जब दलहन-तिलहन का दाम बढ़ा, समर्थन मूल्य बढ़ा तभी हमारे देश के किसानों ने दलहन-तिलहन की तरफ ध्यान दिया तो इनका आयात भी कम हुआ है। यह काम पिछले 6-7 वर्षों में नरेन्द्र मोदी जी की सरकार के समय में हुआ है। आगे भी हमारा यही प्रयास रहेगा, हम किसानों की आय को दुगना करने का प्रयास करते रहेंगे।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Question Hour is over. The House stands adjourned till 2.00 p.m.

[Answers to Starred and Unstarred Questions (Both in English and Hindi) are available as Part-I to this Debate, published electronically on the Rajya Sabha website under the link https://rajyasabha.nic.in/Debates/OfficialDebatesDateWise]

The House then adjourned for lunch at one of the clock.

The House reassembled after lunch at two of the clock,
MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.*

DISCUSSION ON THE WORKING OF THE MINISTRY OF JAL SHAKTI*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let us now have reply to the Discussion on the Working of the Ministry of *Jal Shakti*, raised by Shri Digvijaya Singh, on 15th March, 2021. On the 15th March, 2021, the discussion by Members was concluded. माननीय मंत्री जी, अब आप इसका जवाब दें।

जल शक्ति मंत्री (श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत): माननीय उपसभापति महोदय, मैं वर्ष 2021-22 के जल शक्ति मंत्रालय के संबंध में अनुदान की मांगों पर विस्तृत चर्चा का अवसर देने के लिए आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। माननीय दिग्विजय सिंह जी से लेकर कुल 23 सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लिया, राज्य सभा के इस उच्च सदन की डिबेट के स्तर के अनुरूप चर्चा में अपनी तरफ से भागीदारी सुनिश्चित की, उसके लिए भी मैं सभी माननीय सदस्यों का धन्यवाद करना चाहता हूं। माननीय उपसभापति जी, हम सब इस बात को जानते हैं कि सृष्टि में जब किसी भी प्राणी के

---

* Further discussion continued from the 15th March, 2021.

जीवन की बात होती है, तो पानी उसका सबसे महत्वपूर्ण घटक है, ऐसा माना गया है। विष्णु पुराण के इस श्लोक के माध्यम से मैं अपनी बात को प्रारंभ करना चाहता हूं।

"आपो नरा इति प्रोक्ता
आपो वै नराषुनवः ॥
अयनं तस्य ताः पूर्वम
तेन नारायणः स्मृतः ॥"

विष्णु पुराण में उद्धृत इस श्लोक के अनुसार नर मतलब ईश्वर की उत्पत्ति का कारण जल को माना गया और साथ ही साथ जल को नर का प्रथम अयन माना गया। इस दृष्टिकोण से, इसी के कारण से नर को धारण करने वाले, नर अयन को धारण करने वाले व्यक्ति को नारायण कहा गया। निस्संदेह हम सब जानते हैं कि जल का हम सब के जीवन में अत्यंत महत्व है। जल के अभाव में सृष्टि की कल्पना करना भी व्यर्थ है और जल की महत्ता को सामान्य बोलचाल की भाषा में जब हम किसी व्यक्ति के आचरण और व्यवहार की बात करते हैं, तो माननीय दिग्विजय सिंह जी निश्चित रूप से इस बात से सहमत होंगे कि लोग यह कहते हैं कि इसका तो पानी ही मर गया है। जीवन में पानी की महत्ता और हम सबके जीवन में पानी कितना उपयोगी है, इसको लेकर मैं अपनी बातचीत करूं, उससे पहले मैं छांदोग्य उपनिषद् के एक और श्लोक का भी उद्धरण करना चाहता हूं:

"षोडष - कलाः सौम्य पुरुषः
पन्चदाहोह्नि मा-सिः
कामम् आपः पिब
आपोमयः प्राणो न पिबतो
विच्चेतस्यता इति॥"

मनुष्य सोलह कलाओं से युक्त है। वह 15 दिन तक बिना भोजन किए केवल जल के आधार पर जीवित रह सकता है, ऐसा छांदोग्य उपनिषद् कहता है, क्योंकि प्राणी जलमय है, इसलिए जल पीते रहने से जीवन का नाश नहीं होता है। मित्रो, हम सबने अपनी चर्चा में कहा और जल की महत्ता पर भी प्रकाश डाला। मैं सुदूर पश्चिम में देश के पश्चिमी छोर पर जैसलमेर जिले में पैदा हुआ हूं। मैंने जल की कमी को अपनी आंखों से देखकर महसूस किया है। मैंने अपनी माताओं-बहनों को पानी लाने के लिए मीलों-मील पैदल चलते हुए रोज़ाना देखा है। मैंने बचपन में अपनी माँ-बहनों का प्रत्यक्ष अनुभव किया है, उनसे सुना है और देखा है कि जब लड़की 10-12 साल की उम्र की होती है, तो वह कौतूहलवश अपने सिर पर एक गगरी लेकर अपनी माँ के साथ, अपने घर, परिवार की महिलाओं के साथ पानी लेने के लिए जाती है, जो नित्य-प्रतिदिन एक, दो, तीन, चार, पांच, दस किलोमीटर का रास्ता तय करती हैं। परिवार की आवश्यकताओं के लिए सुबह-शाम नित्य-प्रतिदिन यह प्रक्रिया चलती है। जैसे-जैसे उस बालिका की उम्र बढ़ती है, माननीय उपसभापति महोदय, उसके सिर पर गगरियों की संख्या और साइज़ दोनों बढ़ता रहता है। जब उम्र ढलान पर आती है, तो उसी क्रम में धीरे-धीरे गगरियों की संख्या भी कम होती है और उनका

साइज़ फिर छोटा होता जाता है, कमर झुक जाने तक वे अनवरत पानी लाने के लिए संघर्ष करती हैं, यह मैंने अपनी आंखों से देखा है। मैंने अपने परिवार की महिलाओं को यह अभिशाप झेलते हुए देखा है और उनके दर्द को महसूस किया है। मैं जानता हूं कि पानी कितना महत्वपूर्ण है। माननीय उपसभापति महोदय, जब महिलाएं पैदल चलती हैं, वे अपने जीवन भर में जितनी पद यात्रा करती हैं, उन सारे किलोमीटर्स को अगर जोड़ दिया जाए, उनकी गणना की जाए - माननीय दिग्विजय सिंह जी के प्रदेश में लोग नर्मदा की परिक्रमा करते हैं, कुछ लोग गंगा की परिक्रमा करते हैं, मैं इसीलिए कह रहा हूं, क्योंकि उन्होंने नर्मदा की परिक्रमा की है, मेरी माताएं-बहनें धरती की चार-चार बार परिक्रमा करने जितनी यात्रा अपने पूरे जीवन में करती हैं। जल निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है। हमारे कई सदस्यों ने चर्चा के दौरान इस बात को कहा था और आशंका व्यक्त की थी कि दुनिया की कुल आबादी का 18 प्रतिशत हिस्सा हमें भारत में मिला और उसके मुकाबले में केवल चार प्रतिशत पीने का पानी, पीने योग्य पानी हमें प्राप्त हुआ है। निश्चित रूप से हमारे सामने चुनौती बहुत बड़ी है। पूरा विश्व आज जल की चुनौती को महसूस कर रहा है और सामने खड़े खतरे को देख रहा है। भारत के सामने और भी बड़ी चुनौती है। हम विश्व में दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या वाले देश हैं। हमारे देश की अलग-अलग भौगोलिक परिस्थिति है। हमारा देश अत्यंत विशाल होने के कारण अलग-अलग भौगोलिक परिस्थिति वाला देश है। मैंने जिस जैसलमेर क्षेत्र की बात कही है, वहां मुश्किल से 100 मिलीमीटर बरसात होती है, वहीं दूसरी ओर देश में ऐसे प्रदेश भी हैं, ऐसे क्षेत्र भी हैं जहां दुनिया की सर्वाधिक बरसात होती है। इसलिए हमारे यहां इस विविधता के कारण चुनौती और बड़ी है। निश्चित ही क्लाइमेट चेंज का खतरा हम सबके सामने है, इसको पूरी दुनिया महसूस कर रही है। आज से दस साल पहले जब क्लाइमेट चेंज की बात की जाती थी तब यह कहा जाता था कि क्लाइमेट चेंज का समय आने वाला है, लेकिन आज तो आप और हम सब अपने घर के दरवाज़े पर दस्तक देते हुए उस क्लाइमेट चेंज को देख रहे हैं, उसका अनुभव कर रहे हैं। हमारे यहां rainfall patterns change हुए हैं। यदि मैं आंकड़ों की दृष्टि से देखूं, तो भारत में कुल पानी की उपलब्धता शायद आज से 50 वर्ष पूर्व जितनी थी, उसमें कमोबेश अधिक परिवर्तन नहीं हुआ होगा। वही चार हजार BCM जिसे हम कैलकुलेट करते हैं कि 50 साल पहले जितना भारत को पानी मिलता था - चाहे बर्फ से, चाहे बरसात से, इंटरनेशनल बेसिन से, वही चार हजार BCM पानी लगभग अभी भी मिलता है। लेकिन erratic and scanty rainfall patterns जिस तरह से आये हैं, जिस तरह से बरसात के दिनों की संख्या सिकुड़ती और सिमटती जा रही है - यकायक एक जगह पर क्लाउड बर्स्ट होकर एक दिन में इतनी बरसात हो जाना कि साल भर का ऐवरेज पूरा हो जाए, ऐवरेज के अकाउंट में आए, लेकिन उसकी उपयोगिता कितनी बनेगी, यह निश्चित रूप से चिंता का विषय है।

जल चिंता का विषय है और भारत के लिए अत्यंत ही ज्यादा चिंता का विषय है। इस विषय को यदि इस देश में किसी ने समझा और उस पर सकारात्मक दृष्टि से काम करना प्रारम्भ किया, तो मेरे देश के प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने किया। ... (**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः आप वरिष्ठ सदस्य हैं। प्लीज़, बैठकर बात न करें।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : एक ऐसा विषय है, जिसे केन्द्र की सरकार ने ... (**व्यवधान**)... आप 55 साल तक केन्द्र की सरकार का हिस्सा रहे हैं शक्तिसिंह साहब, आप केवल हँसते रहे, लोगों का दर्द देख-देखकर मुस्कराते रहे। यदि आपने 55 साल पहले इस को..(**व्यवधान**)..इस खतरे को समझा होता, अनुभव किया होता..(**व्यवधान**)..यह मैं नहीं कह रहा हूं..(**व्यवधान**)..मैं बाद में कहूंगा कि नर्मदा में टांग अड़ाई थी या नहीं अड़ाई थी। यह तो उन्होंने कल खुद स्वीकार किया है। ..(**व्यवधान**).. आप 55 सालों तक सत्ता में रहे। यदि आपने उस समय इसको दूरदृष्टि के साथ देखा होता, तो आज स्थिति दूसरी होती, पर संकट यह है कि हमारी दृष्टि तो 10 जनपथ या 10 अक़बर रोड क्या होता है, वहीं तक सीमित है, उससे आगे जाती नहीं है। ..(**व्यवधान**)..अलग-अलग विभागों में - माननीय शक्तिसिंह जी कल जब बात कर रहे थे, तब कह रहे थे कि अलग-अलग विभागों को जोड़कर मंत्रालय बना दिया गया। अलग-अलग विभाग नहीं, अलग-अलग मंत्रालय थे। पेयजल पर अलग मंत्रालय में विचार किया जाता था, ग्रामीण पर अलग मंत्रालय में, शहरी विकास के विषय को अलग मंत्रालय में विचार किया जाता था, अंडरग्राउंड वॉटर के विषय का विचार किसी और मंत्रालय में होता था, गंगा नदी का अलग से मंत्रालय था, देश की अन्य नदियां MOEF में डिस्कस होती थीं, देश के भूगर्भ के पुनर्भरण के ऊपर Land Resources Ministry में, पंचायती राज मंत्रालय में डिस्कशन होता था। हमारे दूरदृष्टया प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी ने इन सबको एकीकृत किया। उन्होंने इन सबको जोड़कर एक साथ एक मंत्रालय का सृजन किया, ताकि हम इस महत्वपूर्ण विषय पर एक साथ, एकरूप, एक विचार और एक मन होकर इस देश को जल समृद्ध बनाने की दृष्टि से काम कर सकें।

माननीय उपसभापति महोदय, केवल इतना ही नहीं, उन्होंने 2019 में सरकार के आने साथ ही देश के इस आसन्न जल संकट से मुक्ति के लिए हमारे देश के सामने एक विज़न रखा। उन्होंने बार-बार कहा कि कोई भी ऐसा विषय, जो हमें बहुत बड़ी चुनौती के रूप में दिखाई देता है, यदि जन सामान्य उसकी जिम्मेदारी ले ले, समाज उसकी जिम्मेदारी ले ले, तो उसकी सफलता सुनिश्चित हो जाती है। उन्होंने जल के आंदोलन को जन-जन का आंदोलन बनाने की प्रक्रिया प्रारंभ की। जल शक्ति मंत्रालय के गठन के ठीक बाद कदम उठाया। महोदय, देश के सारे चुने हुए पंचायती राज प्रमुख कहीं सरपंच कहलाते होंगे, कहीं मुखिया कहलाते होंगे, कहीं ग्राम प्रधान कहलाते होंगे, उन्होंने अलग-अलग भाषा-भाषी प्रदेशों में रहने वाले ऐसे 2.5 लाख जन-प्रतिनिधियों को 12 अलग-अलग भाषाओं में अपने हस्ताक्षर से पत्र लिखकर भेजा और उनसे आग्रह किया कि हम अपने गाँव के विकास के लिए जो ग्राम सभा करते हैं, हमें जो कानून सम्मत ग्राम सभा करनी आवश्यक है, उसी परिप्रेक्ष्य में एक ग्राम सभा ऐसी निश्चित कीजिए जिसमें गाँव के हम सब लोग साथ बैठकर केवल और केवल जल के विषय में, कि अपने गाँव को किस तरह से जल समृद्ध बनाया जा सकता है, इस पर विचार करें। हम इसके ऊपर चर्चा करें कि गाँव का पानी गाँव में किस तरह से रोका जा सकता है, घर का पानी घर में किस तरह से रोका जा सकता है, खेत का पानी खेत में किस तरह से रोका जा सकता है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता होती है कि 2 लाख गाँवों में इस तरह की जल संसद, ऐसी जल ग्राम सभा आयोजित की गई। केवल इतना ही नहीं, जल के विषय को जन-जन का विषय बनाने के लिए माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में ठीक उसके बाद जल शक्ति अभियान प्रारंभ किया गया। मैं जल शक्ति अभियान के बारे में बाद में विस्तार

से चर्चा करूंगा। महोदय, यह जल शक्ति अभियान प्रारंभ हुआ। देश की सरकार में काम करने वाले Joint Secretary और उसके ऊपर के अधिकारियों को अलग-अलग जिलों में भेजा गया। देश के ऐसे 256 जिले चिह्नित किए गए। उन जिलों में जो अधिकारी गए, उनके साथ technical लोगों की team बनाई गई, CWC, CGWB में काम करने वाले engineers को उनके साथ जोड़ा गया और मुख्य रूप से तीन-चार विषयों पर फोकस करके कि afforestation किस तरह से हो सकता है, हम पुनः अपने परंपरागत जल स्रोतों का किस तरह से पुनरुद्धार कर सकते हैं, water harvesting, water conservation पर किस तरह से काम कर सकते हैं, इनकी एक योजना बनाकर एक स्पंदन क्रिएट हो, इस पर विचार किया गया।

महोदय, 256 जिलों में काम हुआ है। मुझे याद है कि 2019-20 में जब हम यह कार्यक्रम कर रहे थे, तो संसद के सारे साथी, हमारे सारे मित्र, जिनके जिले इन 256 जिलों में नहीं आए थे, वे सभी आग्रह करते थे कि अब की बार हमारे जिले को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। तब वे पत्र लिखकर भेजते थे। मैं खुशी के साथ यह कहना चाहता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी के कर कमलों से आगामी 22 मार्च से हम पूरे देश में एक बार फिर से जल शक्ति अभियान शुरू कर रहे हैं। हम अब की बार इसको 700 के 700 जिलों में प्रारंभ कर रहे हैं। हम इन 700 के 700 जिलों में इस तरह की water conservation activities को प्रारंभ कर रहे हैं।

माननीय उपसभापति जी, आपकी अनुमति से मैं अपनी बात को दो हिस्सों में रखना चाहूंगा। पहली बात तो यह है कि हमारी सरकार प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में किस तरह से काम कर रही है। हम लोग योजनाओं के साथ काम कर रहे हैं। मैं योजना की बात करना चाहता हूं।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि श्री दिग्विजय सिंह जी से लेकर शक्तिसिंह जी ने जो बातें कही थीं, उनमें से अधिकांश बातों का उत्तर मैं दूंगा। लेकिन कुछ-कुछ बातों का अलग से जवाब देने की अनुमति मैं आपसे चाहता हूं।

उपसभापति जी, हम सब इस बात को जानते हैं कि पानी की कमी होने के कारण हमारे जीडीपी पर छः प्रतिशत तक नेगेटिव इम्पैक्ट हो सकता है। अगर पीने का पानी भी ठीक से न मिले, साथ ही साथ औद्योगिक गतिविधियां, जिनका हिस्सा जीडीपी में 30 प्रतिशत से ज्यादा होता होगा, उनके लिए अगर यथेष्ट पानी न मिले तो चिंता और बड़ी हो सकती है। आज पानी की जितनी उपलब्धता है, ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वर्ष 2030 तक इससे दोगुनी और वर्ष 2050 तक आज से चार गुना पानी की आवश्यकता होगी।

मैं आपको फिर से 90 के दशक के गुजरात की ओर ले जाना चाहूंगा। वहां पर 80 और 90 के दशक में, जैसे प्रधान मंत्री ने खुद बताया था कि मैंने स्वयं पानी की समस्या देखी है, एक छोटे से गांव वडनगर में उनका जन्म हुआ था, जहां पर पीने का पानी नहीं था। मैंने भी पानी का वह दर्द अपनी माताओं और बहनों के साथ महसूस किया है, वह उन्होंने भी महसूस किया था। उस समय 80 और 90 के दशक में जिस टैंकर माफिया की चर्चा कल दिग्विजय सिंह जी कर रहे थे, वैसा ही

टैंकर माफिया कच्छ और सौराष्ट्र के रीजन में चलता था। आपके बहुत सारे परिचित हैं, इतना तो मैं जानता हूं। आप पता करके, पूछकर देखें कि वहां किस तरह का माफिया ऑपरेट होता था। ....(**व्यवधान**) मैं यही नहीं कहूंगा कि इनके लोग थे या नहीं थे, लेकिन वहां पर इनके बहुत सारे परिचित हैं, यह मैं जानता हूं। ...(**व्यवधान**) निश्चित रूप से राजस्थान में भी बहुत से परिचित हैं। राजस्थान की परिस्थितियों के बारे में मैं बाद में बात करूंगा।

श्री उपसभापति: कृपया आपस में बात न करें।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : मान्यवर, 80 और 90 के दशक में जिस तरह से गुजरात में पानी की स्थिति थी, टैंकर माफिया काम करता था, हर साल गर्मी के दिनों में जो परिस्थिति आज राजस्थान में होती है, वैसी गुजरात में होती थी। जब वर्ष 2001 में माननीय नरेन्द्र मोदी जी गुजरात के मुख्य मंत्री बने, उससे पहले जितनी सरकारें बनीं और जैसा वे काम करती थीं, यह हम सब जानते हैं। आपकी पार्टी की वहां बहुत सालों तक सरकार रही है। परम्परा यह थी कि अकाल या सूखे के समय किस तरह से लोगों को पानी दिया जा सके, ये कंटिजेंसी प्लान होते थे। इस देश में पहली बार इस समस्या का समग्र रूप से समाधान करने की दिशा में अगर किसी ने काम किया तो वह श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के नाते किया। गुजरात में आज आपको जो सोश्यो- डेवलपमेंट दिखाई देता है, उसकी आधारशिला पीने के पानी और सिंचाई के पानी की और जो सिक्योरिटी उन्होंने प्रदान की थी, उस कारण वह डेवलपमेंट दिखाई देता है।...(**व्यवधान**) अड़ंगे की बात तो बाद में करेंगे।

श्री उपसभापति : कृपया आपस में बात न करें।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : जो चकाचौंध आज आपको दिखाई देती है, गुजरात चमकता हुआ दिखाई देता है, उसकी नींव की ईंट वह पीने का पानी है, जिसकी आधारशिला नरेन्द्र मोदी जी ने रखी, हमें इस बात को कहते हुए गर्व होता है। वह ईंट और वह चमक गुजरात की, जिसकी आधारशिला नरेन्द्र मोदी जी ने रखी थी, वह वर्ष 2001 से लेकर आज तक जारी है, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी की सरकारें वहां लगातार बनती हैं। शक्तिसिंह जी, आप गुजरात छोड़कर दिल्ली आ गए, लेकिन अभी-अभी वहां नगरपालिकाओं और पंचायतों के चुनावों के परिणाम आए, जो सबको मालूम हैं।...(**व्यवधान**)...

श्री दिग्विजय सिंह (मध्य प्रदेश): केशुभाई का नाम भी लीजिए।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : हम गर्व के साथ उनका नाम लेते हैं। केशुभाई पटेल हमारी पार्टी के बड़े नेता थे। वे हमारे लिए सम्माननीय और पूजनीय थे। पर आप भी उसी सम्मान और गर्व के साथ जी-23 के लोगों का नाम एक बार लेने की कोशिश करके देखिए।...(**व्यवधान**) यह कह दीजिए कि पार्टी में उनका कोई योगदान नहीं है या फिर यह कह दीजिएगा कि वे पार्टी के लिए सम्माननीय नहीं हैं या इस बात को मेरी तरह गर्व के साथ स्वीकार करें कि केशुभाई पटेल हमारी

पार्टी के वरिष्ठ नेता थे और हम सबके मार्गदर्शक थे। माननीय उपसभापति महोदय, गुजरात में ट्रेनों से पानी जाने और टैंकर से पानी जाने की परंपरा समाप्त हो गई है। आज लोग उसे भूल गए हैं। इस 25 साल के कालखंड में जो युवा हैं, जिन्होंने यह दृश्य नहीं देखा है, उनको अब यह कहानियों के जैसी लगती है।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने जल शक्ति मंत्रालय का गठन किया। 2019 में देश की जनता ने दोबारा उन्हें आशीर्वाद देकर भेजा। 2014 से 2019 के बीच 5 साल में उन्होंने सामान्य मानवी के जीवन के स्तर में परिवर्तन लाने के लिए विभिन्न योजनाएँ प्रारम्भ कीं। योजनाओं को केवल योजना बनाने तक नहीं या योजनाओं का केवल तुष्टीकरण के लिए उपयोग नहीं, योजनाओं का केवल अपने कैडर, अपने वोट बैंक के तुष्टीकरण के लिए उपयोग नहीं, बल्कि शत-प्रतिशत लोगों तक उस योजना को पहुँचाएँगे, उस लाभ को पहुँचाएँगे, इस लक्ष्य के साथ उन्होंने योजनाएँ प्रारम्भ कीं। दिग्विजय सिंह साहब, याद करिए, आपने भी सड़क, बिजली, पानी के नाम पर चुनाव लड़ा था, जनता ने क्या हालत करके भेजा था! आपको 10 साल के लिए संन्यास लेना पड़ा था। आपने मेरी competence पर, मेरी ability पर, मेरी क्षमता पर और मेरी integrity पर बात उठाई थी, इसलिए मैं कहता हूँ कि याद करिए, 10 साल तक आपको जनता ने वनवास देकर भेजा था! आज तक वापस नहीं आ पाए, अभी भी वनवास चल रहा है। मुझे लगा था कि यह वनवास खत्म होगा, शायद आज कुछ अच्छी बात करेंगे, 10 साल के introspection के बाद कुछ अच्छा, ठीक-ठाक देख कर आए होंगे, कुछ सोच कर आए होंगे। उस विषय पर फिर कभी बात करेंगे। लेकिन माननीय प्रधान मंत्री जी ने सामान्य मानवी के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए बहुत सी योजनाएँ बनाई थीं -'गरीब को घर', 'गरीब को शौचालय', 'गरीब को गैस का चूल्हा', 'गरीब के घर में बिजली'। माननीय उपसभापति महोदय, मुझे याद है, जब मंगल ग्रह पर मंगल यान पहुँचा था, ...(**व्यवधान**)... माननीय उपसभापति महोदय, मैं इस बात के लिए नहीं कहता कि किसने पहुँचाया था, यह मंगल ग्रह पर पहुँचा था, मैंने यह कहा। लोक सभा का सदस्य होने के नाते, मैं नया-नया सदस्य चुन कर आया था, सभी पार्टियों के बड़े-बड़े नेता, सब लोग अपनी तरफ से देश की सरकार को बधाई दे रहे थे। माननीय दिग्विजय सिंह जी की पार्टी के लोग यह भी कह रहे थे कि इसे हमने शुरू किया था। माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस बात को सहर्ष स्वीकार किया था। मैं नया-नया चुन कर आया था। मुझे भी पार्टी की तरफ से 5 मिनट बोलने का अवसर मिला था। मैंने प्रधान मंत्री जी की उपस्थिति में कहा था कि माननीय प्रधान मंत्री जी, बेशक हम मंगल तक पहुँच गए, बेशक हम चाँद पर भी चले जाएँगे, हमने क्रायोजनिक इंजन, रॉकेट, सब बनाने में शायद महारत हासिल कर ली होगी, लेकिन मेरे गाँव के बच्चे आज भी लालटेन की रोशनी में पढ़ते हैं, मेरी माँ को आज भी रात को ढिबरी जला कर भोजन पकाना पड़ता है। करोड़ों घर ऐसे थे, जिनको बिजली नसीब नहीं थी। माननीय प्रधान मंत्री जी ने हर घर तक बिजली पहुँचाने के संकल्प के साथ काम किया, हर घर तक गैस का चूल्हा पहुँचाने के लिए काम किया। जब देश की जनता ने 2019 में विभिन्न विरोधी पार्टियों द्वारा फैलाई गई तमाम भ्रांतियों के बावजूद भी आशीर्वाद देकर उनको भेजा, तब उन्होंने एक और समस्या की ओर विशेष ध्यान दिया, जिससे मेरी माताओं और बहनों को रोज रूबरू होना पड़ता है। संसद में बहुत सारे ऐसे लोग होंगे, जिनको इस बात की कल्पना भी नहीं होगी कि जिसके घर में शौचालय नहीं होता, उस माँ को

रोज कितना कष्ट होता होगा। मैंने तो वह दर्द देखा है, मैं उस दर्द के साथ जिया हूँ, इसलिए मैं कह सकता हूँ कि रोज, नित्य-प्रतिदिन अपनी गरिमा के साथ समझौता करने वाली माँ को रोज 10 किलोमीटर पानी लेने के लिए जाना पड़ता था। मैं राजा के घर में पैदा नहीं हुआ, मैं एक साधारण सिपाही के घर में पैदा हुआ था। माननीय उपसभापति महोदय, हर घर तक पानी पहुँचाने के लक्ष्य के साथ माननीय प्रधान मंत्री जी ने 15 अगस्त, 2019 को 'जल जीवन मिशन' घोषित किया। उस समय देश में कुल मिला कर 18 करोड़ 30 लाख ग्रामीण परिवार थे। 18 करोड़ 30 लाख ग्रामीण परिवारों में से, 55 साल तक जो विपक्ष में बैठे हुए मित्र हैं, उनकी पार्टियों ने राज किया था, देश की सरकार, प्रदेश की सरकार, स्थानीय सरकारें, ग्राम पंचायतें, सब ने मिल कर जो efforts किए थे, उनके बावजूद भी केवल 3 करोड़ 23 लाख घरों तक पीने का पानी पहुँचता था। राज्यों ने ये आँकड़े दिए थे। बहुत सारे आपके भी राज्य होंगे, उन सब ने आँकड़े दिए थे। केवल 17 प्रतिशत से भी कुछ कम घरों तक पीने का पानी पहुँचता था। माननीय प्रधान मंत्री जी ने लक्ष्य तय किया कि हम 2024 तक हर घर तक पीने का पानी पहुँचाएँगे।

मैं आज आपके सामने एक विषय रखना चाहता हूं। 2 अक्टूबर, 2014 के दिन, जब उन्होंने इस बात की घोषणा की थी कि हम देश के प्रत्येक घर तक शौचालय देंगे और जब लाल किले की प्राचीर पर खड़े होकर उन्होंने यह कहा था कि हम देश के प्रत्येक परिवार को बैंक का खाता देंगे, तब बहुत सारे लोगों ने अलग-अलग तरह के आर्टिकल्स लिखे थे। किसी ने कहा, इस देश में यह हो नहीं सकता है। हमने बैंकों में सबका खाता खुलवाने की बात की थी, तो कहा गया, 'Banking infrastructure is not so robust'. Bloomberg ने लिखा था कि यह इतना बड़ा shock absorb कर सके, यह सम्भव नहीं, collapse हो जाएगा। शौचालयों की बातचीत तो बहुत सालों से चलती थी। गांव में पंचायत के एक सरपंच के घर पर, किसी नेता के रिश्तेदार के घर पर अथवा वोट बैंक के तुष्टिकरण के लिए किन्हीं-किन्हीं लोगों के घर पर चार-पांच या दस शौचालय बनते थे। उस समय कोई इस बात को स्वीकार नहीं करता था कि कोई सरकार 100 प्रतिशत के लक्ष्य के साथ काम करेगी। कोई इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था, लेकिन 2019 तक हमने उन सब सपनों को सच करके दिखाया। उसके बाद देश के प्रधान मंत्री ने लाल किले पर खड़े हो कर यह कहा कि 2024 तक हम हर घर को पीने का पानी देंगे। यह योजना केवल पानी देने के लिए नहीं है - हम सुरक्षित पानी देंगे, हम समुचित मात्रा में पानी देंगे, हम नियमित पानी देंगे - उन्होंने जब इस लक्ष्य की बात कही, तो देश के एक भी व्यक्ति के मन में संदेह नहीं था, क्योंकि देश यह जानता है कि मोदी है, तो मुमकिन है। मैं भी आज गर्व से यहां खड़े होकर यह बात कह सकता हूं।

माननीय उपसभापति महोदय, 15 अगस्त, 2019 को इस योजना का ऐलान माननीय प्रधान मंत्री जी ने लाल किले की प्राचीर से किया था। हम सब जानते हैं कि जल राज्यों का विषय है, इसलिए हमने राज्यों के साथ बातचीत की और व्यापक कन्सल्टेशन किया। अलग-अलग राज्यों की अलग-अलग परिस्थितियां हैं, अलग-अलग प्राइयॉरिटीज़ हैं, अलग-अलग स्थितियां हैं। हमने उन सब राज्यों से बातचीत की, चर्चा की और उनकी परिस्थितियों के अनुरूप रीजनल वर्कशॉप की और रीजनल वर्कशॉप करके हमने एक guideline बनाई।

माननीय उपसभापति महोदय, 25 दिसम्बर को सुशासन दिवस, 'Good Governance Day' होता है। उस दिन, श्रद्धेय अटल जी के जन्मदिवस के अवसर पर, विज्ञान भवन से माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस योजना को लाँच किया था। उसी दिन से वास्तव में हमने काम प्रारम्भ किया था। इन तिथियों का अत्यंत महत्वपूर्ण संयोजन है। 25 दिसम्बर, 2019 के बाद 25 मार्च, 2020 को देश में लॉकडाउन लग गया था। कोरोना की आपदा हमारे देश को ही नहीं, पूरी दुनिया को डरा रही थी। हमें भी मन में एक बार डर तो लगा था कि शायद अब न जाने कितना समय बरबाद हो जाएगा, कितना समय जाया हो जाएगा, किस तरह से हम इसको पूरा कर पाएंगे।

माननीय उपसभापति महोदय, मैं गर्व के साथ यह कह सकता हूं, driving force मेरे लीडर, आदरणीय प्रधान मंत्री जी का था। यह उनका मार्गदर्शन ही था कि हमने एक भी दिन, पेंडेमिक के उस लॉकडाउन के समय में भी जाया नहीं किया। Over the table जितनी बातें हो सकती थीं, स्टेट के मुख्य मंत्रियों और जल मंत्रियों के साथ जितनी conferences हो सकती थीं, उनके सेक्रेटरीज़ के साथ जितनी conferences हो सकती थीं, वेबिनार के माध्यम से हमने उनके साथ बहुत सारी conferences कीं। हमने उनसे कहा कि आप अपनी तैयारी करिए और जब अनलॉक की प्रक्रिया शुरू हुई, तब हमने और भी तेजी के साथ काम शुरू कर दिया। अगर मैं 25 दिसम्बर, 2019 को भी reference date मानता हूं, तो 25 दिसम्बर, 2019 के बाद, आज 17 मार्च, 2021 को हम लोग बात कर रहे हैं। केवल पन्द्रह महीने हुए हैं, या पन्द्रह महीनों से भी अभी कुछ दिन कम हैं। इन 15 महीनों में, तमाम विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी आज मैं गर्व के साथ यह बात कह सकता हूं कि आपके 55 साल मिला करके, पिछले 70 साल में जितने घरों तक पीने का पानी पहुंचा था, उससे ज्यादा घरों तक पीने का पानी पहुंचाने में आज हम कामयाब हुए हैं। आपने 3 करोड़ 23 लाख घरों तक पानी पहुंचाया था और हम आज तक 3 करोड़ 85 लाख घरों तक पानी का कनेक्शन दे चुके हैं। 3 करोड़ 23 लाख का जो कुल आंकड़ा था, वह आज 7 करोड़ 8 लाख हो गया है। यह बात मैं नहीं कहता हूं, आपके राज्य ही यह बात कहते हैं।

माननीय उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से आदरणीय दिग्विजय सिंह जी को ये बातें बताना चाहता हूं। अभी आपके राज्यों के हालात की भी मैं बात करूंगा, आपके राज्यों के हालात की भी अभी मैं चर्चा करूंगा। हमने देश की 7 करोड़ माताओं-बहनों के इस संकट का समाधान करने और इस अभिशाप से उन्हें मुक्त कराने में सफलता प्राप्त की है। मैं अपने क्षेत्र की उन गरीब माताओं-बहनों की तरफ से, जो अपने सिर पर पानी ले जाने के लिए अभिशप्त थीं और जिनके घरों में अब पानी आता है, पानी का घूंट पी करके, माननीय प्रधान मंत्री जी का अभिनन्दन करना चाहता हूं। मैं अभिनन्दन करना चाहता हूं, हिमाचल प्रदेश की लाहौल स्पीति घाटी की बहनों का, वहां के अनुराग भाई यहां बैठे हैं, वहां पर दुनिया का सबसे ऊँचा मतदान केन्द्र, Tashigang में है, आज वहां हरेक घर तक पीने का पानी पहुंचता है। उस पहाड़ पर रहने वाली बुढ़िया मां के आशीर्वाद को, जो अपनी कमर के पीछे पानी ढो करके लाती थी, इस सदन के माध्यम से माननीय प्रधान मंत्री जी तक पहुंचाना चाहता हूं। लेह घाटी में, जहां minus 30 degree temperature रहता है, दुनिया के अनेक विकसित देश शायद उतनी ऊँचाई तक अपने लोगों के लिए पीने का पानी ठीक से नहीं पहुंचा पाते हैं। वहां रहने वाला वह बूढ़ा आदमी, जो बर्फ खोद

करके लाता था और स्टोव पर गर्म करके उस पानी को पीता था, उसकी तरफ से मैं माननीय प्रधान मंत्री जी का अभिनन्दन करना चाहता हूं। उसके घर तक, उसके हर गांव तक पीने का पानी पहुंचाया।

उपसभापति महोदय, आज देश के 52 जिले 100 प्रतिशत पीने का पानी वाले जिले हो गये हैं, जल समृद्ध जिले हो गये हैं। 80-85 हज़ार गांव ऐसे हैं, जो जल समृद्ध गांव हो गये हैं। कल माननीय दिग्विजय सिंह जी जब चर्चा कर रहे थे, तब उन्होंने कहा कि प्राथमिकता पिछड़े लोगों को दी जानी चाहिए, एससी, एसटी के लोगों को दी जानी चाहिए, यदि उन्होंने गाइडलाइंस का पन्ना पलटकर देखा होता तो वे मुझे आशीर्वाद और धन्यवाद देते, हमारे प्रधान मंत्री को धन्यवाद और आशीर्वाद देते, शायद उनके स्वभाव में नहीं है, अगर दे देते तो जी-23 के साथ में बैठना पड़ता। जी-23 क्या है, अभी इसके ऊपर एक गाना लिखेंगे, यह क्या है। 85 हज़ार गांव ऐसे हैं, जिनमें एक भी महिला को, पिछड़ी जाति की गरीब महिला, किसी भी महिला को घर से बाहर पीने का पानी लाने के लिए नहीं जाना पड़ता। अब हम उससे एक कदम आगे बढ़कर काम कर रहे हैं - प्रदेशों में प्रतिस्पर्धा चल रही है, लगभग डेढ़ लाख से ज्यादा कनेक्शंस रोज दिये जा रहे हैं। मैं राज्यों की स्थिति के बारे में बाद में चर्चा करूंगा, लेकिन हमने उससे आगे बढ़कर एक और काम प्रारम्भ किया है, हमने वॉटर क्वॉलिटी पर काम करना प्रारम्भ किया है। हम जानते हैं, देश में हम सब सम्मानित सांसद संसद के सदस्य हैं। आप सबको अगर अपने खून की जांच करानी हो, गांव में बैठे गरीब आदमी को भी करानी हो तो उसको शायद पता है कि खून की जांच कहां होगी, उसे कहां अस्पताल में जाना है, किसी लेबोरेटरी में जाना है, लेकिन पीने के पानी की गुणवत्ता की यदि जांच करानी है तो शायद हमें भी पता नहीं होगा कि हमारी क्लोज़ विसिनिटी में पीने के पानी की कहां जांच हो सकती है और व्यवस्था पर इसी के कारण अविश्वास पैदा होता है, इसलिए लोग घरों में आरओ और वॉटर फिल्टर लगाने के लिए मजबूर होते हैं। इसके लिए देश में एक नया प्रोटोकॉल बने, वॉटर क्वॉलिटी के लिए एक अवेयरनेस बने, उसको लेकर देश के प्रत्येक जिले में हमने एक वॉटर क्वॉलिटी टैस्टिंग लेबोरेटरी, हर ब्लॉक पर एक लेबोरेटरी और उसके साथ-साथ हर गांव में पांच महिलाओं को फील्ड टैस्टिंग किट दी, ताकि वे वॉटर क्वॉलिटी, वॉटर गुणवत्ता की जांच कर सकें, नित्य-प्रतिदिन कर सकें। यह काम प्रारम्भ कर दिया है और एक ऐसा प्लेटफॉर्म क्रिएट किया है, जिसके ऊपर इन सारे टैस्ट्स की रिपोर्ट्स और रिक्विज़िशन दोनों रजिस्टर्ड होंगी और देश में एक रिपॉज़िटरी बनेगी, ताकि देश में आने वाले समय में, किस जगह पर, किस तरह से पानी की गुणवत्ता में परिवर्तन हो रहा है, उसका अध्ययन किया जा सके और उसके अनुरूप पॉलिसीज़ बनाई जा सकें। केवल यहां तक ही नहीं, हमने गांवों में पीने के पानी को केवल सरकारी तंत्र या सरकारी व्यवस्था का हिस्सा नहीं बनाया, बल्कि गांवों में रहने वाले लोग सेन्स ऑफ ओनरशिप के साथ में, उसका मालिक होने के विचार के साथ में, उसके भाव के साथ में उसका ऑपरेशन और मेन्टेनेन्स करें, इसकी जिम्मेदारी भी उनको दी है। वे लोग सहभागी बनकर काम करें और उसके माध्यम से गांव में एक रिस्पॉन्सिबल और रिस्पॉन्सिव लीडरशिप खड़ी हो और उस रिस्पॉन्सिबल और रिस्पॉन्सिव लीडरशिप में आनुपातिक रूप से हमारे पिछड़े वर्ग के एससी, एसटी वर्ग के बंधु और बहनों की सहभागिता हो। इसके साथ-साथ 50 प्रतिशत महिलाओं को यह जिम्मेदारी मिले, इसे हमने कानूनन सुनिश्चित किया है। हमने अपनी गाइडलाइंस में

लिखा है कि आप विलेज वॉटर कमिटी बनायेंगे और उसका यह फॉर्मेशन होगा। कल माननीय दिग्विजय सिंह जी चिन्ता कर रहे थे, मैं इनकी चिन्ता के लिए इनका अभिनन्दन करना चाहता हूं, लेकिन मैंने कहा कि अगर आपने मेरी गाइडलाइंस को पढ़ लिया होता तो मुझे बहुत सारे आशीर्वाद देते, आप मेरी क्षमताओं पर अविश्वास नहीं करते।

महोदय, हमने यात्रा यहीं नहीं छोड़ी है। माननीय प्रधान मंत्री जी हमेशा कहते हैं कि हम एक ऐसे युग में पैदा हुए हैं, जिसमें हम तकनीक के माध्यम से देश और दुनिया को बदल सकते हैं और देश तथा दुनिया के हालात बदल सकते हैं। हमने सेंसर बेस्ड टेक्नोलॉजीज़ को डेवलप करने के लिए एक प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया। देश-दुनिया के अनेक स्टार्टअप्स, इस क्षेत्र में काम करने वाले, सेंसर्स बनाने वाले लोग उसमें सम्मिलित हुए और हमने उन सब स्टार्टअप्स को आग्रह किया कि आप ऐसा सेंसर हमें डेवलप करके दीजिए, जिसे हम ऑनलाइन गांवों में लगा सकें, उससे हम वॉटर क्वॉलिटी और क्वॉन्टिटी को एन्श्योर कर सकें, ताकि अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को, टेल एंड पर रहने वाले व्यक्ति को भी इसकी सुविधा मिल सके। क्योंकि मैं गांव का आदमी हूं, इसलिए मैं जानता हूं कि गांव से दूरी पर हमेशा बेचारे गरीब और पिछड़े वर्ग के व्यक्ति को ही रहना पड़ता है। राजा-महाराजा तो गांव के बीच में, ऊंचे महल में रहते हैं। गरीब व्यक्ति के घर तक, अन्तिम छोर तक पानी पहुँच रहा है या नहीं पहुँच रहा है, इसका आकलन उस सेंसर के माध्यम से होगा। माननीय उपसभापति महोदय, 10 गाँवों में pilot project चल रहा है, successfully चल रहा है। मैं यह मानता हूँ कि आने वाले समय में नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश के हर गाँव में जो पीने का पानी पहुँचेगा, जितना infrastructure create होगा - दिग्विजय सिंह साहब, शक्तिसिंह जी और मेरे सारे सांसद मित्र जो बैठे हैं, ये सब लोग login करके सीधा हमारे IMS platform पर देख सकेंगे कि किस गाँव को, किस घर में कितना पानी मिल रहा है, किस गुणवत्ता का मिल रहा है। केवल दिवास्वप्न दिखा कर, जिसे मेरे गाँव में कोहनी पर गुड़ लगाना कहते हैं - ओम जी भाई साहब मेरे गाँव से आते हैं- तो कोहनी पर गुड़ लगाकर बार-बार सरकार में आना, यह हमारी परम्परा नहीं है। माननीय उपसभापति महोदय, हम जो कहते हैं, वह करके दिखाते हैं, हम नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में काम करने वाले लोग हैं।

माननीय उपसभापति महोदय, जब पीने के पानी की चर्चा चल ही गयी है, तो मैं बंगाल का एक उदाहरण आपके सामने जरूर रखना चाहता हूँ। अब वे आ गये हैं। ...(**व्यवधान**)... अब मेरे भाई साहब आ गये हैं। इतनी देर से आप उनको मन ही मन में याद कर रहे थे। मैं बंगाल की चर्चा आपके सामने जरूर करना चाहता हूँ। अभी चुनाव के सिलसिले में मुझे पश्चिमी बंगाल में जाने का अवसर मिला, गाँव में जाने का अवसर मिला। मैंने कहा कि हमने जहाँ देश में 3 करोड़ 85 लाख घरों तक पीने का पानी पहुँचाया, हम 17 प्रतिशत से 37 प्रतिशत के आंकड़े को छूने वाले हैं, 20 प्रतिशत का quantum jump केवल 15 महीने में हुआ, वहीं पश्चिमी बंगाल में 1 करोड़ 62 लाख घर हैं। माननीय उपसभापति जी, जब माननीय प्रधान मंत्री जी ने योजना प्रारम्भ की थी, तब पश्चिमी बंगाल में केवल 3 प्रतिशत के आस-पास घरों तक पीने का पानी पहुँचता था, जो 6 लाख से कुछ कम हैं। देश की सरकार द्वारा पैसा दिये जाने के बावजूद भी पश्चिमी बंगाल में उदासीनता देखिए कि वहाँ माँ, माटी और मानुष के नाम पर बनी हुई सरकार है, माँ का दर्द हरने के लिए

योजना बनी है और उस योजना के पालन की स्थिति यह है, उस योजना को लागू करने की स्थिति यह है कि जहाँ देश में 20 प्रतिशत की प्रगति हुई है, वहाँ बंगाल में यह प्रगति अभी तक केवल 3 प्रतिशत ही हो पायी है और आज भी आधे से ज्यादा पैसा unspent पड़ा है, जिसकी चिन्ता आदरणीय दिग्विजय सिंह जी कल कर रहे थे। माननीय उपसभापति महोदय, ...(**व्यवधान**)...

SHRI JAIRAM RAMESH (Karnataka): Sir, is this election speech? ...(*Interruptions*)...

DR. SANTANU SEN (West Bengal): Sir, I strongly object. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: माननीय उपसभापति महोदय, ...(व्यवधान)... I am not yielding. ...(*Interruptions*)...

DR. SANTANU SEN: Sir, I strongly object. ...(*Interruptions*)...

SHRI GAJENDRA SINGH SHEKHAWAT: Sir, I am not yielding. ...(*Interruptions*)...

DR. SANTANU SEN: Sir, my objection should be recorded. ...(Interruptions)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: माननीय उपसभापति महोदय, मैं flagship scheme के आंकड़ों की जानकारी सदन को दे रहा हूँ। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please. ...(*Interruptions*)... He is not yielding. ...(*Interruptions*)...

DR. SANTANU SEN: My objection should be recorded. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is not yielding. ...(*Interruptions*)...

श्री आनन्द शर्मा (हिमाचल प्रदेश): सर, ...(**व्यवधान**)... Notification हो चुका है। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is not yielding. ...(*Interruptions*)...

DR. SANTANU SEN: It may not be.....(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: माननीय उपसभापति महोदय, मैं अपनी scheme के आंकड़ों की जानकारी आपको दे रहा हूँ। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is not yielding. ...(*Interruptions*)... Please. ...(*Interruptions*)...

SHRI ANAND SHARMA: This cannot be used.....(*Interruptions*)...

श्री उपसभापतिः प्लीज़। कृपया बैठ कर आपस में बात न करें। ...(**व्यवधान**)...

PROF. MANOJ KUMAR JHA (Bihar): Sir, it should be summarily expunged. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: माननीय उपसभापति महोदय, मैं तो अपनी योजना के आंकड़े दे रहा हूँ। ये आंकड़े ऐसे नहीं हैं, जिनको मैंने छुपाकर रखा था और पहली बार उद्घाटित कर रहा हूँ। मैं public domain में उपलब्ध आंकड़े दे रहा हूँ और public domain में उपलब्ध आंकड़ों को एक बार कहने में मुझे नहीं लगता कि किसी भी तरह की आपत्ति होनी चाहिए। साहब, मैं आप लोगों जितना अनुभवी नहीं हूँ, बालक हूँ, लेकिन सुनने की क्षमता रखिए। ये संसद के platform पर, public domain में यहाँ पर आये हुए आंकड़े हैं। उनको रखने में मुझे लगता है कि कहीं कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

माननीय उपसभापति महोदय, हम 3 लाख 60 हज़ार करोड़ रुपये की लागत से जिस योजना को लेकर चले हैं, उसकी आपूर्ति के लिए मैं देश के प्रधान मंत्री जी का और देश की माननीया वित्त मंत्री आदरणीय निर्मला जी का अभिनन्दन करना चाहता हूँ और मेरे छोटे भाई आदरणीय वित्त राज्य मंत्री यहाँ बैठे हैं, उनका अभिनन्दन करना चाहता हूँ कि इस बार जो मेरे मंत्रालय को 60,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की grant दी गयी है, उसमें से 50,011 करोड़ रुपये केवल पेयजल के लिए दिये गये हैं, ताकि हम देश की माताओं और बहनों का यह दर्द दूर कर सकें। मैं आज जिम्मेदारी के साथ इस पवित्र सदन में खड़े होकर कह रहा हूँ कि इस साल फिर 3 करोड़ और नये घरों की माताओं एवं बहनों के कष्ट को हरने का काम नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह सरकार करने वाली है। हम एक लाख गाँवों तक पानी पहुँचाने वाले हैं।

माननीय उपसभापति महोदय, यह 'जल जीवन मिशन' एक जन-आन्दोलन बने - हम सब लोग जो यहाँ बैठे हैं, हम सब लोग अपने क्षेत्र के, अपने प्रदेश के, अपने एरिया के प्रतिनिधि हैं, हम सब लोग अपने क्षेत्र के लीडर्स हैं - मैं आप सबसे भी यह आग्रह करूँगा। मैंने 'जल जीवन मिशन' में अभी एक notification भेजा है कि उसमें सांसदों की सहभागिता होनी चाहिए। आप जो District Action Plan बनाते हैं, उसमें जिस nodal district से सांसद आते हैं, उस District Action Plan में उनकी सहमति होनी चाहिए। उनसे बातचीत की जानी चाहिए, उद्घाटन और

शिलान्यास के अवसर पर भी उनको बुलाना चाहिए, ताकि मेरे विपक्ष के मित्र कम से कम यहाँ आकर साधुवाद तो दे सकें कि हमने यह काम होते हुए अपनी आँखों से देखा है।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : प्लीज़, आपस में बैठ कर बात न करें।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : ये सब लोग देख सकें और यहाँ मेरा अभिनन्दन कर सकें, मेरा धन्यवाद कर सकें, देश के प्रधान मंत्री जी का आभार व्यक्त कर सकें कि हम देश के हर एक घर तक पीने का पानी पहुँचा रहे हैं। कल माननीय दिग्विजय सिंह जी चिंता कर रहे थे कि आपको बजट तो इतना मिल गया, लेकिन आपके पास इतने प्रोजेक्ट्स हैं या नहीं हैं। मैं यह बताना चाहता हूँ कि आज 1 लाख, 91 हज़ार करोड़ रुपए के ongoing प्रोजेक्ट्स हैं और ये प्रोजेक्ट्स आने वाले तीन साल में पूरे होने वाले हैं। इसके अतिरिक्त राज्यों ने इस साल के अपने स्टेट प्लान्स बनाने शुरू कर दिए हैं, उनकी श्रृंखला भी चालू हो गई है। मैंने मुख्य मंत्रियों के साथ व्यक्तिगत रूप से बात की है। आपके प्रदेशों के, आपकी पार्टी के द्वारा शासित प्रदेशों के मुख्य मंत्रियों से भी बात की है - भूपेश बघेल साहब से भी बात की है, अशोक गहलोत साहब के जो मंत्री हैं, उनसे भी बात की है। इसके अतिरिक्त जितने प्रदेशों में आपकी सरकार है, पार्टी से ऊपर उठ करके, क्योंकि हर एक प्रदेश तक, हर एक व्यक्ति तक, हर एक घर तक पीने का पानी पहुँचाना है - राजनीतिक प्रतिबद्धताओं के आधार पर नहीं, बल्कि केवल हक के आधार पर हर एक व्यक्ति तक, अंतिम छोर पर खड़े हुए व्यक्ति तक लाभ पहुँचे - इस लक्ष्य के साथ हम काम कर रहे हैं। मैंने सांसदों से भी निवेदन किया है कि दिशा कमेटी में डिस्कशन के समय इसके ऊपर बातचीत करें, इसके ऊपर काम करें और इसकी लगातार, निरंतर हर तीन महीने में समीक्षा करें, ताकि आप सबके सहयोग से हम इसे और अधिक त्वरित गति से पूरा कर सकें।

श्री उपसभापति : माननीय मंत्री जी, लगभग 45 मिनट होने वाले हैं।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : उपसभापति महोदय, मैं बस 15 मिनट में समाप्त कर दूँगा।

श्री उपसभापति : यह तो एक घंटा हो गया, लेकिन पार्टी ने कहा था कि लगभग 30-40 मिनट लगेंगे। अभी और भी बिज़नेस हैं, इसलिए कृपया आप अपनी बात जल्दी समाप्त करें।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : उपसभापति महोदय, मैं 15 मिनट में अपनी बात समाप्त कर दूँगा। माननीय उपसभापति महोदय, 'स्वच्छ भारत मिशन' वर्ष 2014 में प्रारंभ हुआ था और आज हम गर्व के साथ यह कह सकते हैं, भारत के लोग पूरी दुनिया में कहीं भी खड़े होकर गर्व के साथ कह सकते हैं -- मैं 2019 में Stockholm में World Water Week में गया था, जब मैंने यह कहा कि sustainable development goals के लिए जो निश्चित किया गया है कि SDG-6 को 2030 तक 'Sanitation for all' achieve करना था, हमने 2019 में achieve किया है। दुनिया के 100 करोड़ लोग अभिशप्त थे, उनमें से 60 करोड़ लोग भारत में थे। हमने उनके जीवन में परिवर्तन लाने में सफलता पाई है, लेकिन लक्ष्य यहाँ तक ही नहीं है, एक लक्ष्य को प्राप्त करने के बाद आत्ममुग्धता

के भाव के साथ सो जाना - यह नरेन्द्र मोदी जी का स्वभाव नहीं है, बल्कि उससे आगे बढ़ कर हमने कहा कि अब हम संपूर्ण स्वच्छता के लिए काम करेंगे। हमने SBM-2, 'स्वच्छ भारत मिशन' का दूसरा पायदान लिया कि हम complete sanitation के लिए काम करेंगे। गाँव में liquid और solid waste के complete management के लिए एक protocol बने और जिस तरह से गाँव ने अपने आपको, जिलों ने अपने आपको ODF घोषित किया था, उसी तरह से उस protocol का पालन करते हुए complete sanitation के इंडेक्स पर अपने आपको comply करके जिले, पंचायतें और गाँव अपने आपको ODF Plus घोषित कर पाएँ - इस दिशा में हमने तेजी से काम प्रारंभ कर दिया है। आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि एक हजार से ज्यादा गाँवों ने अपने आपको ODF घोषित कर दिया है।

माननीय उपसभापति महोदय, हम गंगा मिशन पर जो काम कर रहे हैं, उस पर चर्चा हुई। मैं बहुत ज्यादा विस्तार में नहीं जाना चाहता हूँ। 1985 में Ganga Action Plan-1 प्रारंभ हुआ था, इसकी जानकारी निश्चित रूप से होगी, दिग्विजय सिंह जी तो जानते होंगे, शक्तिसिंह जी अभी नए-नए आए हैं, कल इन्होंने इसके बारे में प्रश्न खड़ा किया था। Ganga Action Plan-1, Ganga Action Plan-2, Yamuna Action Plan-1, Yamuna Action Plan-2, गोमती प्लान-1, इन सबमें मिला कर 1985 से लेकर 2014 तक केवल चार हज़ार करोड़ रुपए खर्च हुए थे और वह भी टुकड़ों में। जब मुझे यह जिम्मेदारी मिली, तब मैंने इसकी समीक्षा की। मैं उत्तर प्रदेश में माननीय मुख्य मंत्री जी के साथ बैठ कर समीक्षा कर रहा था, आपको आश्चर्य होगा, दुख भी होगा और हम सभी को दुख होगा, क्योंकि ultimately, we all are responsible to the people, exchequer, taxpayer का पैसा है, देश में 15 साल से 15 एमएलडी का एक Sewage Treatment Plant (STP) बना था, मैं नाम नहीं लूँगा, एक व्यक्ति के हस्तक्षेप के कारण 15 साल से उसके ऊपर ताला लगा हुआ था, बिजली का कनेक्शन नहीं हो पाया था कि उसके घर में बदबू आ जाएगी। हमने उसको प्रारंभ कराया।

मैं आज गर्व के साथ यह बात कह सकता हूँ कि जितनी क्षमता उस समय थी, हमने आज उससे 15 गुना ज्यादा क्षमता अर्जित की है। पिछले कुम्भ के समय दुनिया के 122 देशों के लोगों ने प्रत्यक्ष द्दष्टया होकर इसके लिए साधुवाद दिया कि गंगा नदी के पानी की क्वॉलिटी में एक ज़बर्दस्त इम्प्रूवमेंट हुआ है। सर, केवल इतना ही नहीं, अभी कुम्भ चल रहा है, मैं आप सबसे यह पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूँ कि आप गंगोत्री से लेकर हरिद्वार तक जाइए और पानी को उठाकर सीधा आचमन कीजिए, आपको किसी भी तरह की कोई समस्या नहीं होगी, इसकी जिम्मेवारी मैं लेता हूँ। हमने यह सुनिश्चित किया कि एक बूँद पानी भी raw sewage में नहीं जाएगा। सर, गंगोत्री से लेकर या देवप्रयाग से लेकर गंगा जहाँ महासमुद्र में विलीन होती है, वहाँ तक गंगा पूरी लंबाई में dissolved oxygen के parameter पर 100 परसेंट comply करती है। कल जब मेरे सदस्य यह बोल रहे थे, तब कुछ माननीय सदस्य आपत्ति कर रहे थे।

[उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) *पीठासीन हुए*]

महोदय, कानपुर में भी comply करती है। कानपुर में जाकर वह सीसमाऊ नाला देखिए, उसमें 130 करोड़ लीटर पानी रोज़ आता था। अंग्रेज़ों के जमाने से नदी के अंदर 40-50 फीट कीचड़ उलीचा जाता था, लेकिन आज वह सेल्फी प्वाइंट है। वहाँ जाकर सेल्फी खिंचवाइए और बच्चों को दिखाइए कि हमारे समय में यह स्थिति थी और मोदी जी के राज्य में यह स्थिति है। आप इसे आने वाले समय में याद रखेंगे।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, हमने केवल गंगा की शुद्धता और निर्मलता के लिए ही नहीं, बल्कि गंगा की अविरलता के लिए भी काम किया है। हमने e-flow notification जारी किया, ताकि गंगा के ecosystem में रहने वाले जलीय जीवों को भी उनका अधिकार मिल सके। गंगा के पानी की निर्मलता में जो परिवर्तन आया है, वह केवल लोगों से पूछने से पता नहीं चलेगा, बल्कि जाकर उस Dolphin से पूछिए, जिसकी संख्या अब सैकड़ों गुना बढ़ गई है। उस हिल्सा मछली से पूछिए, जिसकी संख्या हज़ारों गुना बढ़ गई है और हम संख्या बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। उन जलीय जीवों से पूछिए कि गंगा नदी के पानी में कैसी शुद्धता आई है? कानपुर में जाकर शांति के साथ निश्चित दस मिनट खड़े होकर देखना - एक-एक फुदकती हुई मछली आपको आपके प्रश्न का उत्तर दे देगी। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष महोदय, कल माननीय दिग्विजय सिंह जी चिंता कर रहे थे कि देश के भूभर्ग के जल की स्थिति विकट है। मैं यह बात मानता हूँ। आज भी हमारी सबसे ज्यादा, 65 प्रतिशत dependability भूभर्ग के जल पर है। पंजाब जैसा प्रदेश, जिसे पाँच नदियों के प्रदेश के नाम से जाना जाता है, जहाँ सबसे ज्यादा सिंचाई होती है, वहाँ भी groundwater का depletion सबसे ज्यादा है। पंजाब से आए हुए सदस्य यहाँ बैठे हैं। वे मेरी बात से इत्तेफाक रखेंगे, माननीय आनन्द शर्मा साहब निश्चित रूप से रखेंगे। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि देश के लगभग 20-22 प्रतिशत ब्लॉक्स ऐसे हैं, जो या तो critically exploited हैं या over exploited हैं। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, इस बात की केवल चिंता करने से काम नहीं चल सकता था, बल्कि समाधान की दिशा में काम करने की आवश्यकता थी। माननीय दिग्विजय सिंह जी ने सुझाव दिया, aquifer के बारे में समझाया कि वे ज़मीन के अंदर बड़े-बड़े मटके जैसे हैं, अगर उनमें से पानी निकालते हैं, तो पानी भरने की व्यवस्था भी होनी चाहिए। पहले उन्हें पहचानने की व्यवस्था होनी चाहिए। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, जब UPA की सरकार थी, तब NAQUIM programme शुरू हुआ था। उस समय 1:50,000 के स्केल पर अध्ययन करते थे, जिससे मोटे तौर पर आज कोई लाभ नहीं होने वाला है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हमने heliborne technology के आधार पर काम करना प्रारंभ किया है। पहले देश के most critical area में, गुजरात से लेकर -- यहाँ शक्तिसिंह गोहिल जी बैठे हुए हैं, वे मुझे धन्यवाद देंगे -- हम गुजरात से लेकर हरियाणा होते हुए पश्चिमी उत्तर प्रदेश के पूरे हिस्से को एक साल में heliborne survey के माध्यम से 1:10,000 के स्केल पर ज़मीन के अंदर के aquifers और over the surface topography की एक पूरी report sheet बनाकर हर पंचायत को देंगे, ताकि 15th Finance Commission और 'नरेगा' ने जो पैसा दिया है, जो लाखों-करोड़ रुपया इस काम पर खर्च होता है, उस पैसे का सदुपयोग हो सके और गाँव का व्यक्ति जान

सके कि उसके गाँव की जमीन में कितना पानी है और उसे उस पानी का किस तरह से उपयोग करना है।

कल एक माननीय सदस्य राय दे रहे थे कि ज़मीन के पानी के Participatory Watershed Management पर काम करना चाहिए। माननीय सदस्य ने कहा कि यह काम मैंने ही शुरू किया था। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह काम अनेक प्रदेशों ने शुरू किया था। आंध्र प्रदेश में 'Neeru-Chettu' प्रारंभ किया गया, राजस्थान में 'मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान' प्रारंभ हुआ, जब माननीय प्रधान मंत्री जी मुख्य मंत्री थे, तब उन्होंने 'सुजलाम सुफलाम योजना' प्रारंभ की और महाराष्ट्र में 'जलयुक्त शिवार' अभियान की शुरूआत हुई है। ऐसे ही अनेक जगहों पर सबने अपनी-अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए काम किया है। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, 'अटल भूजल योजना' के नाम से हमने 6,000 करोड़ रुपये का एक पायलट प्रोजेक्ट प्रारंभ किया। सात प्रदेश, जो सबसे ज्यादा vulnerable हैं, उन सात प्रदेशों के 78 जिलों में हमने इसके ऊपर काम करना प्रारंभ किया है। हमने इसके ऊपर Participatory Watershed Management के सिद्धांत पर काम करना शुरू किया है। इस देश में पहली बार सप्लाई साइड को छोड़कर डिमांड साइड के मैनेजमेंट पर योजना बनाकर, उसके ऊपर हमने काम करना प्रारंभ किया है। महोदय, इसके परिणाम निश्चित रूप से आएँगे। मुझे याद दिलाया गया कि मैं इस बात की भी चर्चा करूँ, इसके लिए मैं माननीय दिग्विजय सिंह जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहता हूँ।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने अपने विभाग की मोटी-मोटी चीज़ों पर आप सबके सामने विषय रखा। मेरे विपक्ष के साथियों ने तथा माननीय दिग्विजय सिंह जी ने कल जो चर्चा की, अब मैं उसके बारे में 10-15 मिनट बात करके अपनी बात समाप्त करूँगा।

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय मंत्री जी, आपके पास सिर्फ पाँच मिनट हैं।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, अगर आप मुझे 10 मिनट दे देंगे, तो मैं अपनी बात पूरी कर लूँगा, क्योंकि यह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है।

महोदय, मैंने पीने के पानी की बात की। जब सब लोग मेरे मंत्रालय के कार्यों की समीक्षा कर रहे थे, तब सबने कहा कि expenditure नहीं हो रहा है, expenditure नहीं हो पा रहा है, खर्चा नहीं कर पा रहे हैं। मंत्री की competence के ऊपर बात की गई, मंत्री की acceptance पर बात की गई, मंत्री की ability पर बात की गई, मंत्री की governance capacity पर बात की गई। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं उदाहरण देना चाहता हूँ। मैं केवल 'जल जीवन मिशन' का उदाहरण आपके सामने रखना चाहता हूँ। मैंने आँकड़े रखे कि इसमें 18 करोड़ 93 लाख मिले थे, जिसमें हम 3 करोड़ 23 लाख से 7 करोड़ 8 लाख तक पहुँचे हैं, हमने 3 करोड़ 85 लाख नए कनेक्शंस दिए हैं।

हम कुछ राज्यों की भी बात कर लें कि आखिर यह राशि unspent क्यों रह जाती है। पंजाब में किसकी सरकार है, यह हम सब जानते हैं। श्रीमान्, हमने पंजाब की सरकार को वर्ष 2019-20 में 227 करोड़ रुपये दिए, जिसमें से राज्य ने केवल 73 करोड़ रुपये खर्च किए। इसी तरह, हमने वर्ष 2020-21 में उसे 363 करोड़ का आवंटन किया, लेकिन उस फंड में से आज तक एक भी पैसा पंजाब राज्य नहीं ले पाया है। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, इससे आगे हम छत्तीसगढ़ की भी चर्चा करें। छत्तीसगढ़ में माननीय प्रधान मंत्री जी ने 'जल जीवन मिशन' इस उद्देश्य के साथ शुरू किया था कि उस गरीब आदिवासी महिला के घर में भी पीने का पानी पहुँचे,जो जंगल में रहती है। उसके लिए हमने वर्ष 2019-20 में 208 करोड़ रुपये की निधि आवंटित की थी, जिसमें से केवल 66 करोड़ रुपये राज्य सरकार खर्च कर पाई है। ...(**व्यवधान**)...

PROF. MANOJ KUMAR JHA: Sir, I have a point of order... ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Under which rule? ...(*Interruptions*)...

PROF. MANOJ KUMAR JHA: Sir, under Rule 110.

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय मंत्री जी, ...(**व्यवधान**)...माननीय मंत्री जी ...(**व्यवधान**)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, वर्ष 2020-21 में...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय मंत्री जी, एक मिनट। ...(**व्यवधान**)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : मैं तो स्थिति बता रहा हूँ। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Member, what is the point of order? What is your specific point?

PROF. MANOJ KUMAR JHA: Just look at the line; it says, "In making his speech, a member shall not refer to the details of the Bill further than is necessary for the purpose of his arguments"... ...(*Interruptions*)...

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : ठीक है, मनोज जी।

PROF. MANOJ KUMAR JHA: Sir, that is very important.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Manoj*ji*, I have heard your point of order. ...(*Interruptions*)...

PROF. MANOJ KUMAR JHA: Sir, I repeat. We had a very healthy debate. Somehow, I believe I am in Howrah, listening to a political speech, taking names, State by State, Opposition-ruled States. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Manoj*ji*, you have made your point. ...(*Interruptions*)...

PROF. MANOJ KUMAR JHA: This is a blot on the spirit of democracy in this House. ...(*Interruptions*)...

SHRI PARTAP SINGH BAJWA (Punjab): Sir, I have a point of order. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Under which rule?

SHRI PARTAP SINGH BAJWA: Sir, under Rule 190. As the hon. Minister has specifically named my State of Punjab, what I basically want to ask him as to what the reasons are, जिसके कारण स्टेट ने एक पैसा खर्च नहीं किया? ...(**व्यवधान**)... Number two,... ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Let's close the point of order. ...(*Interruptions*)... Bajwa*ji*, please address me.

श्री प्रताप सिंह बाजवा: सर, हमारा पूछने का मकसद यह है कि आपको पता है कि पंजाब देश के लिए अन्नदाता है, सबसे ज्यादा water का exploitation हमारा हुआ। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Bajwa*ji*, I got your point of order. ...(*Interruptions*)... I have understood your point of order. ...(*Interruptions*)...

श्री प्रताप सिंह बाजवा : सर, एक मिनट। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि ...(**व्यवधान**)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं संरक्षण के लिए आपका अभिनन्दन करना चाहता हूँ। ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रताप सिंह बाजवा: महोदय, मैं यह पूछना चाहता हूं कि यह जो पानी का over exploitation हुआ है, water levels are alarmingly falling in Punjab. ...(*Interruptions*)... What is the Union Government doing?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): You made your point, I heard you. ...(*Interruptions*)...

श्री प्रताप सिंह बाजवा: आपने यह तो बता दिया कि पैसे दिए, लेकिन खर्च नहीं हुए..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): You made your point, Bajwa*ji*. ...(*Interruptions*)...

श्री प्रताप सिंह बाजवा : मगर आपकी जो ज़िम्मेवारी है, जो प्रदेश आपको सबसे ज्यादा चावल देता है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): You made your point, Bajwa*ji*. ...(*Interruptions*)... I will go to the hon. Minister now. ...(*Interruptions*)...

श्री प्रताप सिंह बाजवा : इनका discussion दिग्विजय सिंह जी के साथ स्टार्ट हुआ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Thank you, Bajwa*ji*. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं संरक्षण के लिए आपका अभिनन्दन करना चाहता हूं। मैं छत्तीसगढ़ की बात कर रहा था...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): He is not yielding, Bajwa*ji*. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : छत्तीसगढ़ को हमने 208 करोड़ रुपये दिए, उसमें से केवल 66 करोड़ रुपये खर्च किए गए। हमने वर्ष 2020-21 में 445 करोड़ रुपये दिए, उसमें से मात्र 223 करोड़ रुपये प्रयोग किए गए। ...(**व्यवधान**)... जहां 46 लाख घरों में पीने का पानी पहुंचाना था, जो केवल 12.6 प्रतिशत coverage inception के समय में था। ...(**व्यवधान**)... देश ने 20 प्रतिशत प्रगति की, जबकि छत्तीसगढ़ केवल साढ़े पांच प्रतिशत प्रगति कर पाया। ...(**व्यवधान**)... अब झारखंड की बात भी कर लेते हैं। ...(**व्यवधान**)... उपसभाध्यक्ष महोदय, यदि आप मुझे समय देंगे तो पंजाब की समस्या के संबंध में भी जवाब दे दूंगा। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Bajwa*ji,* hon. Minister is not yielding, you know the rules. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : महोदय, झारखंड में 54 लाख घरों को पीने का पानी मुहैया कराना था, उन 54 लाख घरों में से केवल 7 लाख घरों को पीने का पानी मुहैया कराया जा सका। ...(**व्यवधान**)... सर, जो 291 करोड़ रुपये दिए गए थे, उन 291 करोड़ रुपये में से मात्र 143 करोड़ रुपये खर्च हुए, 54 प्रतिशत पैसा unspent बच गया। ...(**व्यवधान**)... दिग्विजय सिंह जी मुझसे जवाब मांगते हैं, उन्हें अपने मुख्य मंत्री जी से जवाब मांगना चाहिए था। ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रताप सिंह बाजवा :*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Bajwa*ji,* this is not going on record...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : महोदय, मैंने पश्चिमी बंगाल की चर्चा आपके सामने की। ...(**व्यवधान**)... अब मैं आपके सामने राजस्थान की बात भी करना चाहता हूं। मैं अपने प्रदेश की बात भी करना चाहता हूं। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Bajwa*ji,* please take your seat. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : महोदय, जहां देश ने 20 प्रतिशत प्रगति की है, मुझे दुख होता है कि मेरा अपना प्रदेश आधे पैसे भी खर्च नहीं कर पाया। वह दो साल में 50 परसेंट ग्रांट को भी काम में नहीं ले पाया। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Only what the hon. Minister saying is going on record, no other things are going on record...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : महोदय, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Bajwa*ji,* your words are not going on record. Bajwa*ji,* your points are not going on record, only hon. Minister is making the statement, please...(*Interruptions*)...

---

* Not recorded.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : महोदय, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं। ...(**व्यवधान**)... मैंने इनके प्रदेशों की बात की, मैं अपने प्रदेशों की भी बात करना चाहता हूं। महोदय, गोवा ऐसा प्रदेश है, जिसमें एक भी घर आज ऐसा नहीं है, जिसमें पीने का पानी लेने के लिए किसी महिला को बाहर जाना पड़े। ...(**व्यवधान**)... तेलंगाना प्रदेश में हमारी सरकार नहीं है, लेकिन मैं तेलंगाना की सरकार का अभिनन्दन करना चाहता हूं कि वहां एक भी घर ऐसा नहीं है, जहां पीने का पानी लेने के लिए किसी गरीब माँ या बेटी को बाहर जाना पड़े। ...(**व्यवधान**)... महोदय, गुजरात के 87 लाख ग्रामीण घरों में से 77 लाख घरों तक पीने का पानी पहुंचता है। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA)**:** Please take your seat, Bajwa*ji*...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : महोदय, शक्तिसिंह गोहिल जी मुझे आशीर्वाद देंगे। वहां 83 लाख घरों में से 77 लाख घरों तक पीने का पानी पहुंच रहा है, वहां 83 परसेंट कवरेज है। महोदय, हिमाचल प्रदेश में 17 लाख घरों में से 13 लाख घरों तक 76 परसेंट का कवरेज है। हिमाचल प्रदेश incentive grant मांगने के लिए हमारे सामने खड़ा है। महोदय, हरियाणा में 31 लाख ग्रामीण घरों में से 27 लाख घरों तक, 87 परसेंट का कवरेज हुआ है। महोदय, बिहार में 1 करोड़ 83 लाख घरों में से 1 करोड़ 33 लाख घरों तक - 68 प्रतिशत घरों तक पीने का पानी पहुंचा है। ...(**व्यवधान**)...महोदय, 60 हज़ार करोड़ रुपये का बजट आवंटन किया गया है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA)**:** Hon. Minister, we have to conclude now, we are running out of time.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अगले पांच मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA)**:** Let us not cross talk, hon. Minister will be concluding shortly.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : महोदय, कल प्रश्न खड़ा किया गया कि वॉटर रिसोर्सेज़ डिपार्टमेंट का बजट कम कर दिया गया। पीएमकेएसवाई की प्रगति पर चर्चा की गई। हमने 99 परियोजनाएं लीं, अगर सारी स्टेजेज़ को count करूं तो 106 परियोजनाएं लीं - यह कहा गया। मैं स्वीकार करता हूं कि उसमें से 44 परियोजनाएं पूरी हुई हैं, लेकिन उनमें से 20-22 परियोजनाएं ऐसी हैं, जो 90-95 प्रतिशत से भी ज्यादा पूरी हो चुकी हैं। ...(**व्यवधान**)... कहीं एक छोटी सी नहर के बीच में कोई एक-आध सौ फीट का टुकड़ा कोई कोर्ट केस के कारण से रुका हुआ है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA)**:** Let us keep silence, please.

3.00 P.M.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: बाकी कुल मिलाकर जो कवरेज उससे एक्सपेक्टेड था, उसमें 65 प्रतिशत से ज्यादा कवरेज हमने किया है। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, कल एक प्रश्न खड़ा किया गया कि कुल जो 4,800 करोड़ की ग्रांट है, उसमें से 3,200 करोड़ रुपए केवल interest repayment के लिए जाने वाला है। ...(**व्यवधान**)....

श्री प्रताप सिंह बाजवा : हमारा पंजाब ...(**व्यवधान**)...

.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह समझता हूं ...(**व्यवधान**).... माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय ...(**व्यवधान**)....

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Bajwa*ji*, your statement is not going on record. ...(*Interruptions*)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : मुझे लगता है कि यह financial mechanism शायद मेरे मित्रों को समझ में नहीं आया था। ...(**व्यवधान**)....

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. LoP*ji*, please tell the hon. Member. ...(*Interruptions*)..

SHRI RAKESH SINHA (Nominated): Sir, I am on a point of order. ...(*Interruptions*)..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Under which rule? ...(*Interruptions*)..

SHRI RAKESH SINHA: It is under Rule 235. ...(*Interruptions*)..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Please take your seats. ...(*Interruptions*)... Hon. Neeraj*ji*, please take your seat. ...(Interruptions).. Hon. Bajwa*ji*, please take your seat. ...(*Interruptions*).. माननीय नीरज जी, please take your seat. ...(*Interruptions*)... माननीय नीरज जी ...(**व्यवधान**).... माननीय नीरज शेखर जी, प्लीज़। ...(**व्यवधान**).... Hon. Bajwa*ji*, please address the Chair. ...(*Interruptions*).. नीरज शेखर जी...(**व्यवधान**).... माननीय नीरज शेखर जी ...(**व्यवधान**).... Please take your seat. ...(*Interruptions*).. Please address the Chair. ...(*Interruptions*). Hon. Bajwa*ji*, please address the Chair. ...(*Interruptions*).. Hon. Bajwa*ji*, please address the Chair. ..Hon. Anand*ji*, please request the hon. Member to maintain decorum.

...(*Interruptions*).. Hon. LoPji, please request the hon. Member. ...(*Interruptions*).. The Minister's reply is still continuing. ...(*Interruptions*).. Please, Bajwaji. ...(*Interruptions*).. Hon. Neeraj Shekharji, please. ...(*Interruptions*).. Let us keep decorum. ...(*Interruptions*).. Hon. Bajwaji, you have made your point. ...(*Interruptions*).. I allowed you to make your point and you made your point. ...(*Interruptions*).. Please take your seat. ...(*Interruptions*).. Let us continue with the reply. ...(*Interruptions*)... Bajwa*ji*, you are such a senior Member. ...(*Interruptions*).. Please take your seat. I have got your point. Hon. Rakeshji, I have heard your point. ...(*Interruptions*)..

SHRI RAKESH SINHA: Under Rule 235, during the reply, a Member shall not interrupt. ...(*Interruptions*)..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Rakesh*ji*, I have heard your point. ...(*Interruptions*).. Please address the Chair. ...(*Interruptions*).. You have made your point properly. ...(*Interruptions*). Hon. Minister, please conclude. Hon. Minister, please conclude. ...(*Interruptions*).. We have other Business also to transact. ...(*Interruptions*)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : उपसभाध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। अगर आप मुझे मेरे समय के अतिरिक्त समय देंगे, तो मैं निश्चित ही माननीय सदस्य की इस शंका का भी समाधान करूंगा। महोदय, मैं अपने हिस्से के समय को जाया नहीं करना चाहता। उपसभाध्यक्ष महोदय, हमने तो पंजाब सरकार के खाते में डाला था। ...(**व्यवधान**)... पंजाब सरकार ने खर्च कैसे नहीं किया, इसका जवाब वे देंगे या मैं दूंगा?...(**व्यवधान**)... उपसभाध्यक्ष महोदय, हमने पंजाब सरकार के खाते में पैसा भेजा, पंजाब सरकार उसको खर्च नहीं कर पाई....(**व्यवधान**).... क्यों नहीं कर पाई ....(**व्यवधान**)....इसका जवाब वे देंगे या मैं दूंगा? ....(**व्यवधान**)....

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय मंत्री जी, आप Chair को address करें। ....(**व्यवधान**)....आप please conclude करें।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावतः माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, अंतिम बात कहकर मैं अपनी बात खत्म करता हूं। मैं केवल दो विषयों पर बोलकर अपनी बात खत्म करूंगा। मैं छह मिनट में अपनी बात खत्म कर दूंगा। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, कल इस सदन में कहा गया कि हमने पैसा खर्च नहीं किया, गंगा मिशन के विषय में भी यह आपत्ति अनेक सदस्यों ने उठाई और PMKSY के परिप्रेक्ष्य में भी आपत्ति उठाई गई।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं एक अत्यंत गंभीर विषय पर सभी सदस्यों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। हमने एक नया मॉडल लिया। मैंने गंगा की चर्चा करते हुए कहा कि कुल चार हज़ार करोड़ रुपया आपके समय में खर्च हुआ था, हमने 20 हज़ार करोड़ रुपये के डेडिकेटिड फंड से काम करना शुरु किया, 30 हज़ार करोड़ रुपये की परियोजनाएं या तो पूरी हो गई हैं या चल रही हैं।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, जो 30 हज़ार करोड़ रुपये की परियोजनाएं हमने प्रारम्भ कीं और हम एक नया मॉडल लाए, वह hybrid annuity model था। हम hybrid annuity model में 40 प्रतिशत कन्सेशनर को upfront पैसा देते हैं, बाकी शेष पैसा 15 साल तक हर साल annuity के रूप में, उसका केपिटल एक्सपेंडिचर और ऑपरेशनल एक्सपेंडिचर जो है, उसे 15 साल में देते हैं। वह हमारी कमिटेड लायबिलिटी है। उस कमिटेड लायबिलिटी को हमें पूरा करना पड़ेगा और उसी के कारण से आप आज इस प्रश्न को खड़ा कर रहे हैं।

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा): माननीय मंत्री जी, अब आप समाप्त कीजिए।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : आपने परफॉर्मेंस की बात कही थी। सर, मैंने आपसे छह मिनट का समय मांगा है, मैं पांच मिनट में खत्म कर दूंगा।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Minister, please conclude. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सात मिनट का समय नहीं लूंगा, मैं पांच मिनट में खत्म कर दूंगा। हमने PMKSY में लॉंग टर्म इरिगेशन फंड बनाया। नाबार्ड के माध्यम से पैसा मार्केट से रेज़ किया, लॉंग टर्म में उसको रीपे करेंगे और जितना पैसा मार्केट से लेते हैं, उसको टाइमली रीपे करना होता है। यदि उसके लिए हमने पैसा आवंटित किया है, मुझे लगता है कि इसमें तो प्रश्नचिह्न सिर्फ इसीलिए खड़ा किया गया है, क्योंकि उस स्कीम की गंभीरता को शायद देखा नहीं गया है। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरे पास कहने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Members, please keep silence. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, श्रद्धेय श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने हमें देश के लिए सम्पूर्ण समर्पण के साथ समाज की सेवा के लिए जीना सिखाया। श्रद्धेय दीनदयाल जी ने हमें अंतिम पंक्ति में खड़े हुए व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए एकात्म मानववाद का सिद्धांत दिया। श्रद्धेय अटल जी ने हमें सुशासन की परिभाषा दी। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Keep silence, please. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : उस परिभाषा पर खड़े होकर के सुशासन का चित्रण देश में किस तरह से हो सकता है, उसको माननीय प्रधान मंत्री जी ने तेज़ी से , पारदर्शी ढंग से, Cooperative Federalism के माध्यम से आउटकम पर फोकस करते हुए, हमने उस सुशासन की परम्परा को आगे ले जाने का काम प्रारम्भ किया है।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, आज देश और दुनिया इस विषय को देखती है, जानती है, पहचानती है और मानती भी है। ...(**व्यवधान**)... माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात समाप्त करूं, उससे पहले एक अंतिम बात दुख के साथ कहना चाहता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): The hon. Minister is concluding, please keep silence. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : उपसभाध्यक्ष महोदय, राजस्थान का प्रतिनिधि होने के नाते, राजस्थान का बेटा होने के नाते मुझे कल दो विषयों पर बहुत दुख हुआ। मैं उसकी चर्चा करके अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरी competence पर acceptance पर, ability पर, governance पर प्रश्न खड़ा किया गया। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं धन्यवाद करना चाहता हूं कि मुझे माननीय सदस्य ने introspect करने का अवसर प्रदान किया, क्योंकि अटल जी सिखाकर गए थे कि 'निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।' ...(**व्यवधान**)...

श्री आनन्द शर्मा: यह कबीर जी ने कहा है। ...(**व्यवधान**)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : ऐसे निंदक के बारे में हमें अटल जी ने पढ़ाया, आपको कबीर जी ने पढ़ाया होगा। हमने कबीर नहीं पढ़ा है, हमने अटल पढ़ा है। हमने श्यामा प्रसाद मुखर्जी को पढ़ा है, हमने दीनदयाल उपाध्याय को पढ़ा है और हम उनकी विचारधारा के साथ में खड़े हुए हैं। माननीय उपसभाध्यक्ष जी, ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Minister, please address the Chair. ...(*Interruptions*)...

श्री आनन्द शर्मा: यह कबीर जी ने कहा है कि ...(**व्यवधान**)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावतः माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैंने यह नहीं कहा कि अटल जी ने कहा। ...(व्यवधान)... मैंने यह कहा है कि माननीय अटल जी ने सिखाया है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Minister, please address the Chair. ...(*Interruptions*)...

श्री आनन्द शर्मा: यह कबीर जी ने कहा है। ...(**व्यवधान**)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: आनन्द शर्मा जी, मैं अज्ञानी आदमी हूं । ...(**व्यवधान**)... मैं क्षमा मांगता हूं, अगर आपको समझने में भूल हुई है। मैंने यह कहा कि अटल जी ने सिखाया।

श्री आनन्द शर्मा: आपने कहा है।...(**व्यवधान**)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: हमको अटल जी ने सिखाया। मैंने यह नहीं कहा कि किसने कहा, मैंने कहा कि कबीर ने कहा और अटल जी ने सिखाया है, जो हमने सीखा है।...(**व्यवधान**)...

उपसभापति (डा. सस्मित पात्रा): माननीय आनन्द शर्मा जी,...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: आनन्द शर्मा साहब, हम कबीर जी का सम्मान करते हैं। मैं क्षमा चाहता हूं कि आपको समझाने में त्रुटि हुई।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Minister, please address the Chair. ...(*Interruptions*)...

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: कबीर ने कहा और अटल जी ने हमको पढ़ाया। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं दो पंक्तियां कह कर अपनी बात समाप्त करूंगा।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): No; no, you have to conclude. आपके बोलने का समय पूरा हो गया है।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं केवल तीन मिनट में अपनी बात खत्म कर दूंगा।

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा): नहीं, नहीं। आपको बोलते हुए 70 मिनट हो चुके हैं।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: उपसभाध्यक्ष महोदय, कल दो घटनाएं हुई हैं। मुझे राजस्थान का बेटा होने के नाते बहुत दुख हुआ है। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, कल कोर्ट का एक फैसला आया है। ..(व्यवधान)..मैं राजस्थान से हूं।..(**व्यवधान**)..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): I am not allowing you. ...(*Interruptions*).. I am not allowing you. ...(*Interruptions*)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं राजस्थान का प्रतिनिधि हूं।

श्री प्रताप सिंह बाजवा : उपसभाध्यक्ष महोदय ..(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Bajwa*ji*, please take your seat. ..(*Interruptions*)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं राजस्थान का प्रतिनिधि हूं। राजस्थान वीरों और शूरवीरों की धरती है।..(**व्यवधान**).. राजस्थान में बलिदान की परंपरा है। ..(**व्यवधान**)..माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, हर घर में एक न एक फौज का सिपाही रहता है, जो सीमा पर इस देश के लिए लड़ता है। ..(**व्यवधान**).. कोई सीआरपीएफ की वर्दी पहनकर देश के लिए खड़ा है, कोई सीआईएसएफ की वर्दी पहनकर खड़ा है..(**व्यवधान**)..कोई पुलिस की वर्दी पहनकर खड़ा है। ..(**व्यवधान**)..माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, कल जो फैसला आया है..(**व्यवधान**)..

श्री प्रताप सिंह बाजवा : उस पर जवाब दीजिए। ..(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Bajwa*ji*, please take your seat. ..(*Interruptions*)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, कल जो फैसला आया है..(**व्यवधान**)..
THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Minister, please conclude. ...(*Interruptions*)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : उस फैसले में जो कहा गया है ..(**व्यवधान**).. मैं वह फैसला यहाँ सुनाना चाहता हूं। ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय मंत्री जी, आप इसको कन्क्लूड कीजिए। ..(**व्यवधान**)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, कल बाटला हाउस एनकांउटर पर फैसला आया है। ..(**व्यवधान**)..फैसले में यह कहा गया..(**व्यवधान**)...मैं क्वोट करना चाहता हूं। ..(**व्यवधान**)..मैं राजस्थान का दर्द आपके सामने रख रहा हूं। फैसले में यह कहा गया, "It is the level of magnitude, decree of brutality, attitude and mindset of wrongdoer behind

the crime along with other factors which makes it a rarest of the rare case. Protection of society and deterring criminal is a vowed object of law and this is required to be achieved by imprisonment of appropriate sentence. The most appropriate sentence for convict like Ariz Khan..."

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Minister, please conclude. आप कन्क्लूड कीजिए। ..(**व्यवधान**)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, कल जब यह फैसला आया ..(**व्यवधान**)..

श्री प्रताप सिंह बाजवा : उपसभाध्यक्ष जी ..(**व्यवधान**)..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): It is not going on record.

श्री शक्तिसिंह गोहिल :*

श्री दिग्विजय सिंह :*

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सीमा पर रहने वाले प्रहरियों के परिवार से आता हूं। मुझे बहुत दुख हुआ कि जब यह घटना हुई थी, तो हमारे सम्माननीय सदस्य और उनके नेता आँसू बहा रहे थे।..(**व्यवधान**)..निश्चित रूप से ..(**व्यवधान**)..उपसभाध्यक्ष महोदय ..(**व्यवधान**)..निश्चित रूप से आज हमें दर्द हुआ। ..(**व्यवधान**)..और दूसरा दर्द मुझे तब हुआ..(**व्यवधान**)..जब मेरे ..(**व्यवधान**)..पश्चिमी राजस्थान के जालौर, बाड़मेर, जैसलमेर..(**व्यवधान**)..में एक-एक बूंद के लिए तरसने वाली माताएं, बहनें थीं।..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय मंत्री जी, आप कन्क्लूड कीजिए। ..(**व्यवधान**)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : जब माननीय सदस्य ने यहाँ खड़े होकर आधिकारिक रूप से यह कहा कि मैंने सरदार सरोवर बाँध बनने से रोका। ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय मंत्री जी, आप कन्क्लूड कीजिए। ..(**व्यवधान**).. शक्तिसिंह जी, आप बैठ जाइए। ..(**व्यवधान**)..

* Not recorded.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : तब निश्चित रूप से राजस्थान की मेरी माँ, बहनों को, राजस्थान के बेटों, बेटियों को ..(**व्यवधान**)..ज्ञात हुआ कि किसके कारण से इतने सालों तक उन्हें प्यासा रहना पड़ा। ..(**व्यवधान**)..उनके खेतों को प्यासा रहना पड़ा। ..(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय मंत्री जी, आप कन्क्लूड कीजिए। ..(**व्यवधान**)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Minister, please conclude.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। मैं सदन में यह कहना चाहता हूं कि,

"उनसे बचकर रहना मित्रो,
जो पानी में आग लगाते।
पानी पीकर भी हैं कोसे,
वो कैसे खुश रह पाते?
पानी में हैं जात पूछते केवल अज्ञानी।
जा चुल्लू भर पानी में डूबो,
जिनकी खतम कहानी,
जिनकी खतम कहानी।"

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Thank you.

SHRI DIGVIJAYA SINGH: Mr. Vice-Chairman, Sir, I have a right to reply to whatever allegations have been made. I will take only three minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Digvijaya Singh*ji,* hon. Minister has already concluded.

SHRI DIGVIJAYA SINGH: I will take only two, three minutes.

श्री दिग्विजय सिंह : उपसभाध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी ने विष्णु पुराण से अपना भाषण प्रारंभ किया और 75 मिनट के भाषण में एक मिनट विष्णु पुराण चला और 74 मिनट मोदी पुराण चला।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Digvijaya*ji,* you have made your point. Please, I cannot allow you further. ...(*Interruptions*).. We have other items of

Business, Digvijaya*ji*. ...(*Interruptions*).. We have other items of Business; we have to move. ...(*Interruptions*)..

SHRI DIGVIJAYA SINGH: Please give me three minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Just conclude in 30 seconds.

SHRI DIGVIJAYA SINGH: For his reply of 75 minutes, I am seeking three minutes. ...(*Interruptions*)..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Let us move on with the Business of the House, Digvijaya*ji*. ...(*Interruptions*)..

SHRI DIGVIJAYA SINGH: Mr. Vice-Chairman, Sir, I need your protection.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Digvijaya Singh*ji*, I allowed you 30 seconds, you have made your point. ...(*Interruptions*).. Ravi Shankar*ji*, we will have to move on. ...(*Interruptions*)..

SHRI DIGVIJAYA SINGH: No, Sir. ..(*Interruptions*).. Please give me three minutes. ..(*Interruptions*)..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): We will have to move on.

श्री दिग्विजय सिंह : सर, जिस प्रकार से इन्होंने मोदी जी की प्रशंसा की है ..(**व्यवधान**)..जो मोदी पुराण यहाँ पर चला है..(**व्यवधान**)..वह ..(**व्यवधान**)..

श्री शक्तिसिंह गोहिल (गुजरात) : 300 करोड़ का क्या हुआ, उसका जवाब नहीं दिया। ..(**व्यवधान**)..

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : आप वह अमरिंदर सिंह जी से पूछिए। ..(**व्यवधान**)..

GOVERNMENT BILLS

The Medical Termination of Pregnancy (Amendment) Bill, 2020

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): We will now take up the Medical Termination of Pregnancy (Amendment) Bill, 2020. We will have to move on with the